राजा सलहेस

मोरंगक जन-राजा — तंत्र-विद्या आ न्यायक विजय

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : मोनक राजा

मोरंग, नेपालमे रहथि सलहेस — सुन्दर, वीर, आ दुसाध जातिक। ओ कोनो राजसिंहासनपर नहि बैसल छलाह — ओ छलाह मोनक राजा, जनताक हृदयसँ मिलल उपाधि, जे सभक विपत्तिमे सहायता दैत रहलाह।

ई गाथा ईर्ष्या आ न्यायक थिक — कोना एकटा तालुकदारक असूयासँ शुरू भेल कुचक्र अन्ततः प्रेम, तंत्र-विद्या, आ सत्यक विजयमे परिणत भेल।

अध्याय १ : दबनाक अस्वीकृत प्रेम

चित्र 1

मोरंग राजाक मालिन छलि दबना — सुन्दर, मुदा तेजस्वी। ओ सलहेससँ प्रेम करैत छलि, मुदा सलहेसक हृदय अपन प्रजाक सेवामे एतेक लीन छल जे दबना दिस हुनकर कोनो ध्यान नहि छलनि।

राजाक वैद्य सेहो दबनासँ प्रेम करैत छलाह — मुदा दबना ओकरा अस्वीकार कऽ देलक। ई अस्वीकृति वैद्यक लेल असहनीय भेल, आ ओ आत्महत्या कऽ लेलनि — एहि गाथाक पहिल दुखद मोड़, जे आगाँ चलि कऽ आरो जटिल परिस्थितिक बीज बनल।

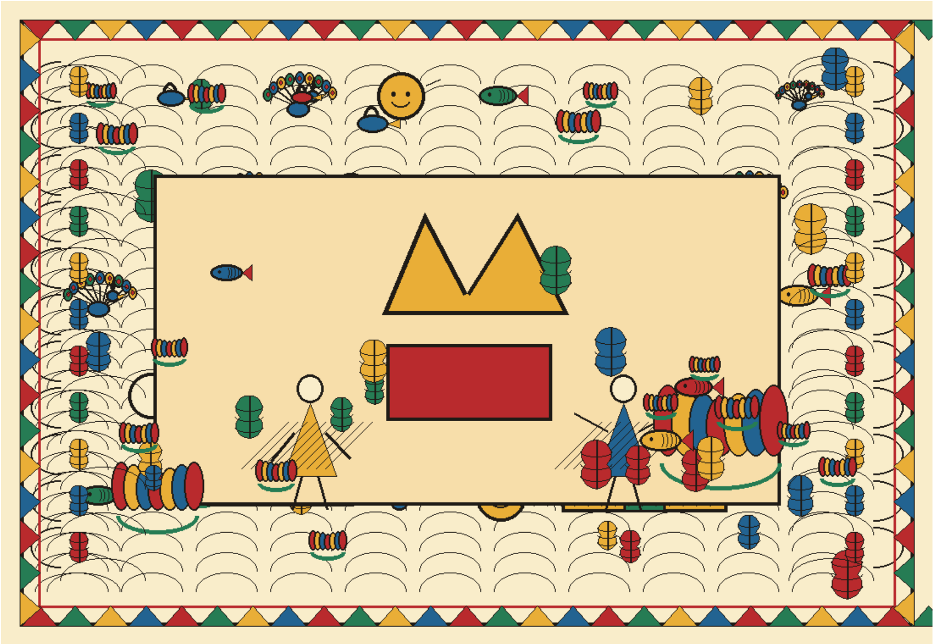

चित्र 2

दबना — जकर हृदय सलहेस लेल धड़कैत छल, मुदा जकरा प्रत्युत्तर नहि भेटैत छल — भीतरे-भीतर एकटा असन्तोष पोसैत रहलि। ई असन्तोष आगाँ चलि कऽ एकटा शक्तिशाली तांत्रिक कार्रवाइमे परिणत होएत।

सलहेस — जे मोरंगक तालुकदार नौरंगी बहादुर थापाक सिपाही छलाह — अपन सरलता आ न्यायप्रियतासँ जनताक हृदयमे राजाक सम्मान पाबि चुकल छलाह, भलहिं ओ कोनो सिंहासनपर नहि बैसल छलाह।

अध्याय २ : तालुकदारक ईर्ष्या

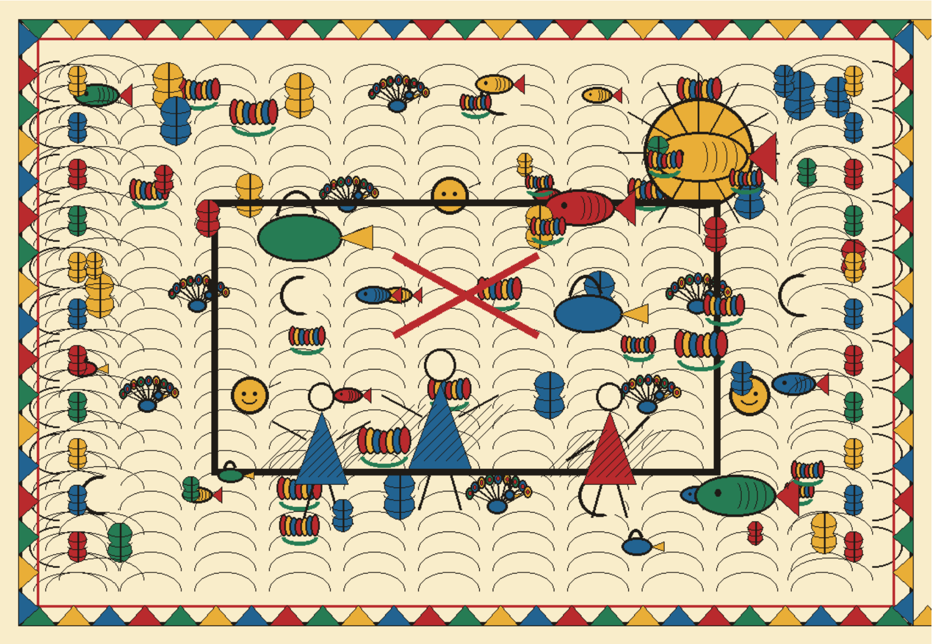

चित्र 3

सभ लोक सलहेसकेँ 'राजा' कहैत छलनि — ई सम्मान जनताक श्रद्धासँ स्वतः उपजल छल। मुदा ई तालुकदार थापाकेँ पसिन्न नहि पड़ल — एकटा साधारण सिपाहीकेँ राजाक उपाधि? ई ओकर अहंकारकेँ चोट पहुँचौलक।

एक दिन दरबारमे थापा सलहेसकेँ पुछलक — 'अहाँक नाम की?' सलहेस सरल उत्तर देलनि — 'हमर नाम छी राजा सलहेस।' ई उत्तर तालुकदारक क्रोधकेँ आरो भड़कओलक।

चित्र 4

थापा आदेश देलक — 'अहाँ अपन नाममे राजा नहि लगाऊ।' सलहेस समझौता करबाक कोशिश केलनि — 'ई पदवी छी, जन द्वारा देल पदवी। कोना छोड़ब एकरा? हम छोड़ियो देब, लोक त' कहबे करत!'

थापा हठ कएलक — 'त' लोककेँ मना कऽ दियौक!' सलहेस निरुत्तर भेलाह — 'लोककेँ कोना मना करबैक? लोकक मोन जे ओ ककरा की बजाओत!' ई तर्क-वितर्क सलहेसकेँ स्पष्ट कऽ देलक जे ई नोकरी आब निमहत नहि — आइ नामक बात, काल्हि किछु आर।

अध्याय ३ : मोरंग-त्याग

चित्र 5

सलहेस दरबारसँ निकलि गेलाह — असन्तुष्ट, मुदा शान्त। हुनकर पितियौत बहिन मुंगेरमे रहैत छलनि, आ बहिनोइ राज दरभंगाक नोकरीमे छलाह — ओतय शरणक विचार सलहेसक मोनमे उठल।

एम्हर कुसमी दबनाकेँ खबरि देलक — 'सलहेस मोरंग छोड़ि जा रहल अछि!' ई समाचार दबनाक हृदयमे हलचल मचा देलक — जकरा ओ चाहैत छलि, से हमेशाक लेल जाइत छल।

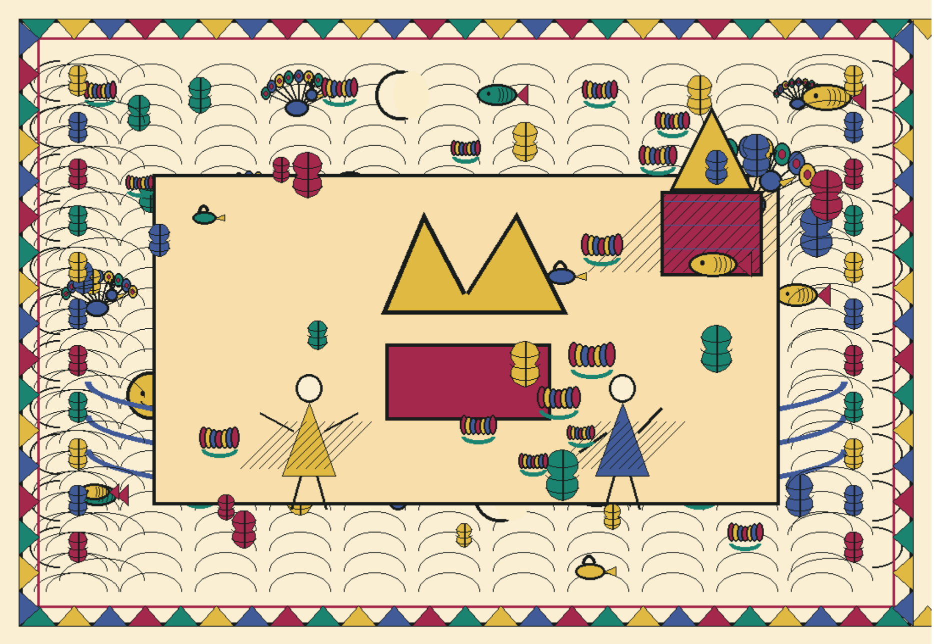

चित्र 6

दबना साधारण स्त्री नहि छलि — ओ कमरू-कमख्यासँ तंत्र-मंत्र सिखने छलि, शक्तिशाली तांत्रिक विद्याक ज्ञाता। ई क्षण ओकरा अपन विद्याक उपयोग करबाक अवसर देलक।

दबना सलहेस लग गेलि आ प्रस्ताव राखलक — 'हम राजाक दरबारमे सात सए सिपाहीक सरदार चूहड़मलकैं हटबा कऽ अहाँकैं सरदार बना देब!' ई प्रस्ताव सलहेसक भविष्य बदलबला निर्णय बनल।

अध्याय ४ : दबनाक जादू आ गीत

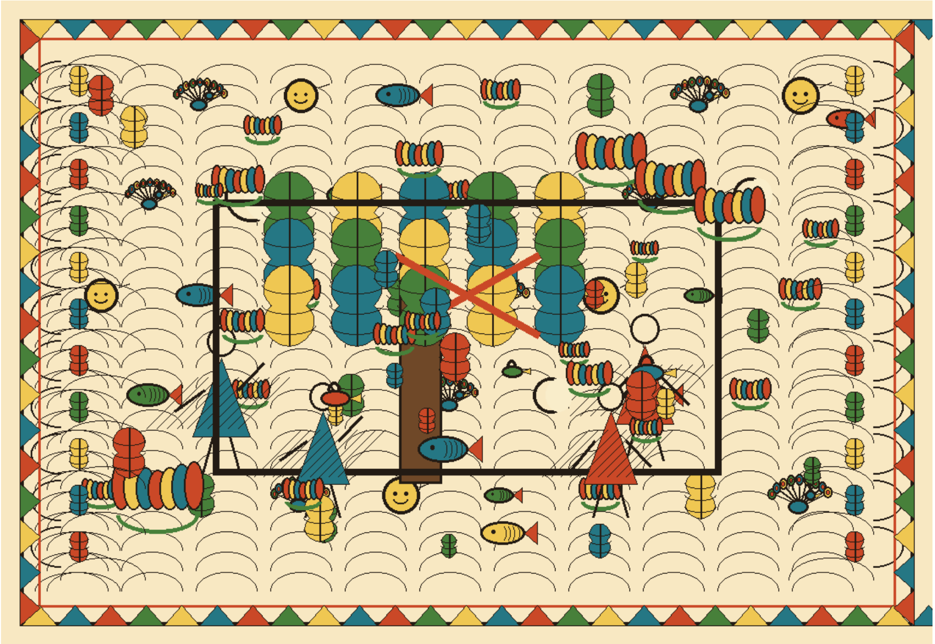

चित्र 7

दबनाक वचन सत्य भेल — बड़का जलसा भेल, आ दबना गीत गाबए लागलि, अपन हृदयक भाव व्यक्त करैत — 'रौ सुरहा, बारह बरस तोरा लेल आँचर बन्हलौँ!' ई गीत ओकर बारह बरखक प्रतीक्षा आ प्रेमक गहराइ प्रकट करैत छल।

मुदा जे पद सलहेसकेँ भेटल, तकरासँ चूहड़मल — पूर्व सरदार — क्रुद्ध भेल। ओ बदलाक योजना बनओलक — चोरी! चूहड़मल राजाक नौ लाखक रानीक हार चोरा कऽ सलहेसक ओछैनमे नुका देलक।

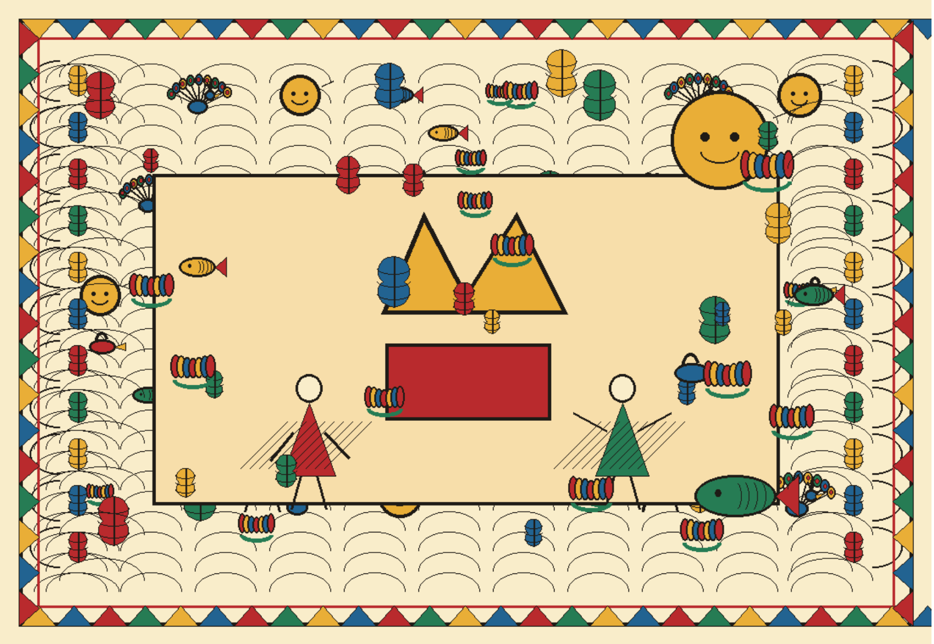

चित्र 8

चूहड़मल फेर राजाक आगाँ उलटे आरोप लगओलक — 'सलहेसक घरक तलासी लेल जाए!' तलासीमे सलहेसक गेरुआक खोलसँ हार खसल — प्रमाण, सलहेस निर्दोष होइतो अपराधी बुझायल।

दबना ई अन्याय सहन नहि केलक। ओ काली मन्दिरमे तंत्र साधना शुरू केलक — भूत-प्रेतकेँ नोतलक, अपन विद्याक पूर्ण शक्ति लगबैत।

अध्याय ५ : सत्यक उद्घाटन

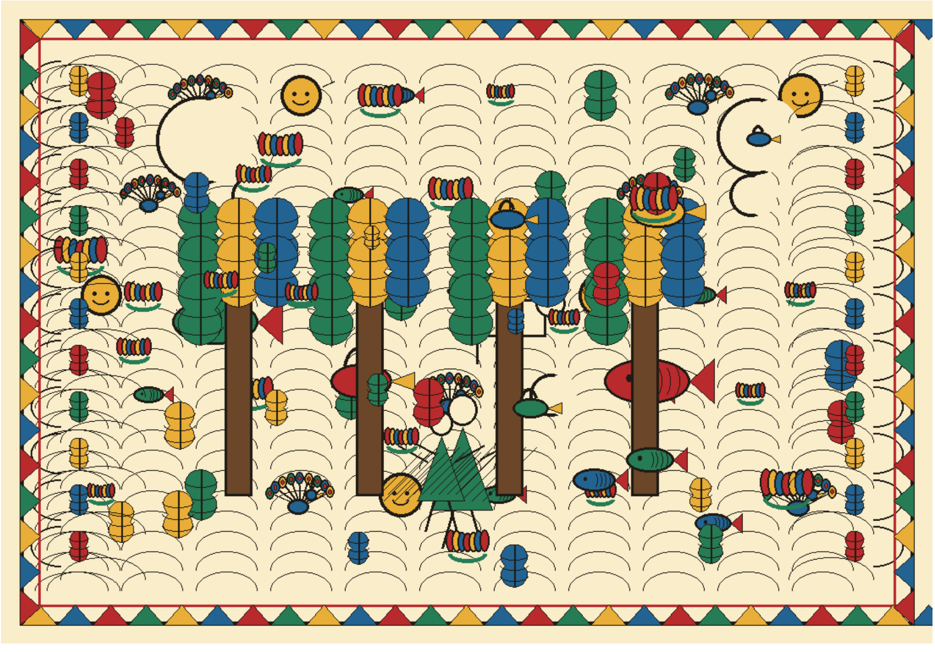

चित्र 9

दबनाक तंत्र-साधनाक शक्तिसँ चूहड़मल खून बोकरए लागल — भयंकर, अलौकिक प्रक्रिया, जकरा झेलब कोनो सामान्य दोषीक लेल असम्भव छल।

एहि यातनासँ त्रस्त चूहड़मल सभटा बकि देलक — चोरी, षड्यन्त्र, सलहेसकेँ फँसएबाक पूरा योजना। सत्य अन्ततः प्रकट भेल, दबनाक तांत्रिक शक्तिक बलपर।

चित्र 10

सलहेसकेँ जेलसँ छोड़ि देल गेल, आ हुनकर ओहदा बढ़ा देल गेल — न्यायक विजय भेल। चूहड़मलकेँ, जे षड्यन्त्रकारी छल, से जेल भेटलैक — अपराधक उचित दण्ड।

ई घटनाक्रम सलहेसक जीवनक ओ मोड़ छल जे दबनाक साहस आ तांत्रिक शक्ति बिनु सम्भव नहि छल। जे प्रेम एक दिन अस्वीकृत बुझायल छल, से अन्ततः न्यायक रक्षक बनल।

अध्याय ६ : विवाह आ मिलन

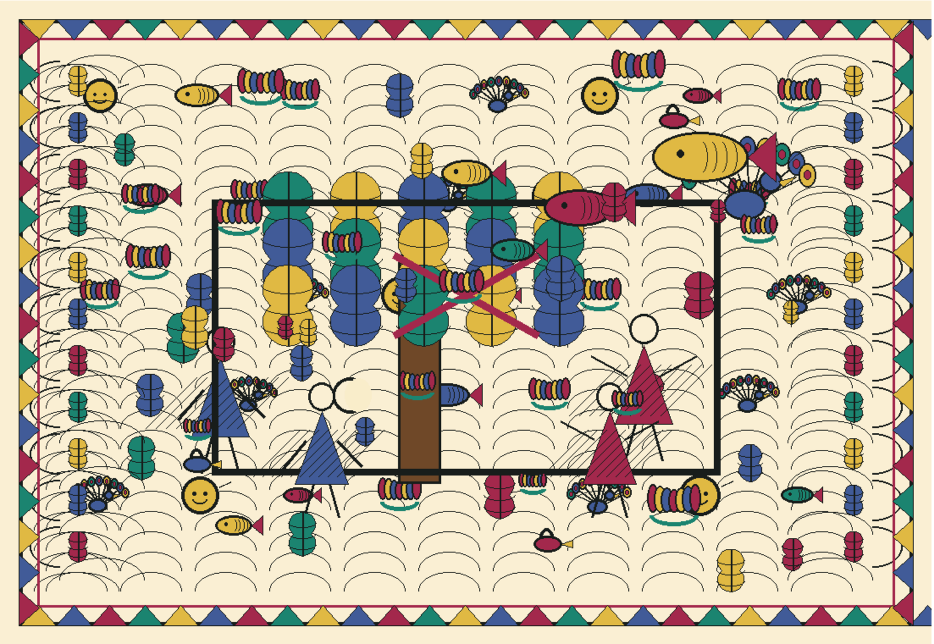

चित्र 11

सत्यक उद्घाटन आ न्यायक विजय पश्चात्, सलहेस अन्ततः दबनाक प्रेम आ बलिदानकेँ चिन्हलनि। जे स्त्री बारह बरख आँचर बन्हने प्रतीक्षा केलक, जकर तंत्र-विद्या सलहेसक जीवन आ सम्मान दुनू बचओलक, से आब सलहेसक हृदयमे अपन उचित स्थान पओलक।

दबना आ सलहेसक विवाह भेल — मोरंगक जनताक हर्षोल्लासक बीच। जे दुसाध सिपाही अपन न्यायप्रियतासँ 'राजा' उपाधि पओने छल, से आब दबनाक साथ अपन पूर्ण जीवन पओलक।

चित्र 12

दुनू विवाहोपरान्त खुशीसँ रहए लगलाह — तालुकदारक ईर्ष्या, चूहड़मलक छल, आ वैद्यक दुखद अन्तक बादो, अन्ततः सत्य आ प्रेम विजयी भेल।

राजा सलहेसक ई गाथा आइयो मिथिला-मोरंगक अंचलमे गाओल जाइत अछि — एकटा जन-राजाक कथाक रूपमे, जे सिंहासनसँ नहि, जनताक हृदयसँ राजा बनल छलाह, आ जकर न्यायप्रियता आ जकर प्रेमिकाक तांत्रिक शक्ति दुनू मिलि कऽ सत्यक रक्षा केलक।

अध्याय ७ : मोनक राजाक विरासत

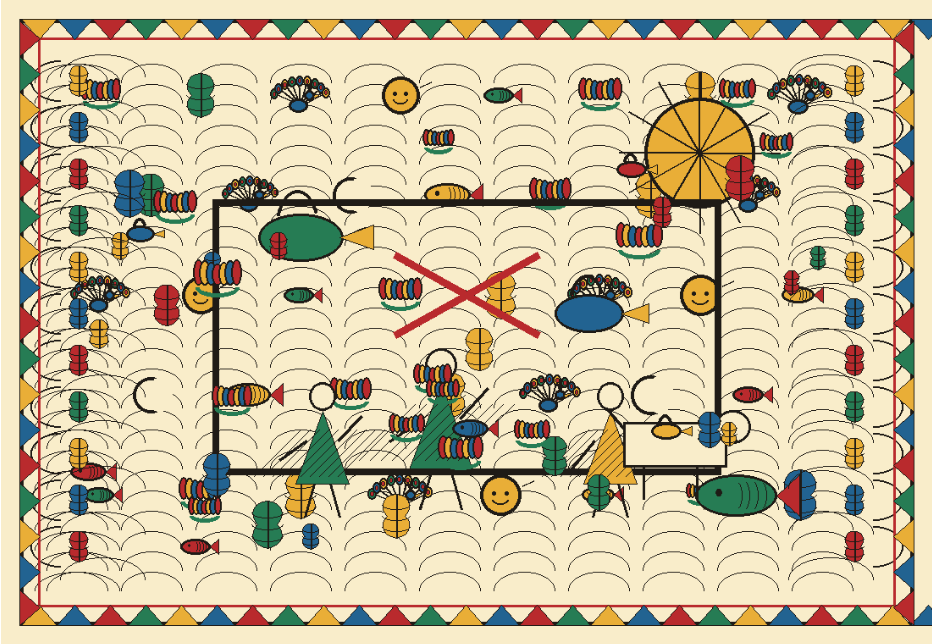

चित्र 13

राजा सलहेसक गाथा मिथिला आ मोरंगक अंचलमे खाली एकटा कथा नहि, एकटा जीवित परम्परा बनि गेल। सलहेस-गीत आइयो लोकगायक सभ गबैत छथि, आ हुनकर नाम सुनिते श्रोताक मोनमे न्याय आ प्रेमक ई गाथा जीवन्त भऽ उठैत अछि।

दुसाध समाजमे सलहेस विशेष श्रद्धाक पात्र बनलाह — एकटा एहन नायक जे जातिक सीमाकेँ पार कऽ जनताक हृदयसँ राजाक उपाधि पओलनि, आ जकर विजय बलसँ नहि, न्याय आ प्रेमक शक्तिसँ भेल।

चित्र 14

आ दबना? ओकर तांत्रिक शक्ति आ अटूट प्रेम आइयो लोककथामे स्मरण कएल जाइत अछि — एकटा एहन स्त्रीक रूपमे जे बारह बरखक प्रतीक्षाकेँ न्यायक हथियार बना देलक, आ जकर विद्या सत्यक रक्षाक साधन बनल।

आइयो मोरंगक कोनो गामक चौपालपर जखन सलहेस-गीतक धुन उठैत अछि, त' लोक कहैत अछि — 'ई वएह सलहेस छथि, जे मोनसँ राजा छलाह, आ मोने रहताह राजा सलहेस — सदा-सर्वदाक लेल।'

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in